' चित्रकला हो या संगीत या नृत्य, किसी भी कला का उद्देश्य अपने आप को बेहतर मनुष्य बनाना है।' इस बात में इतना दम है कि इसे पल्ले बाँधकर रखने के लिए जरूरी नहीं कि इसे रवीन्द्रनाथ टैगोर या महात्मा गाँधी ने ही कहा हो। गांधीजी ने कुछ कहा और चित्रकार विष्णु ने उसका कुछ अर्थ लगाया, और उम्र भर अर्थ निकालता चला गया।

पत्तियों के कोलाज से बना दृष्यचित्र

पगडण्डी चल, मुकाम पर पहुँचा चित्रकार

चित्र : विष्णु चिंचालकर
कथा : दिलीप चिंचालकर

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक की बात है। देवास के सरदार अत्रे की कचहरी में दिनकरराव एक दीवान हुआ करते थे। ओहदे से सामान्य मगर विचारों से आजाद खयाल थे। अपने दोनों बेटों को उन्होंने अपना पेशा चुनने की आजादी दे रखी थी। बड़े बेटे गणेश ने दुनियादारी और पढ़ाई–लिखाई से पीछा छुड़ाकर संन्यासी बनना पसंद किया तो छोटे बेटे विष्णु ने चित्रकार।

परिवार में पहले कोई कलाकार नहीं हुआ था फिर भी विष्णु को चित्र बनाने में खूब दिलचस्पी थी।

वह सुरीला गाता और हार्मोनियम भी बजाता था। दत्त मंदिर के भजन मंडली का वह सबसे छोटा सदस्य था। जिसे मामा (कृष्णराव) मुजूमदार साईकिल के अगले डण्डे पर बैठाकर आसपास के गाँवों में भजन कार्यक्रमों में ले जाते।

मैट्रिक की पढ़ाई देवास में पूरी करने बाद पिता ने विष्णु को चित्रकारी सीखने के लिए इंदौर के फाइन आर्ट्स स्कूल भेजा। दत्तात्रय देवलालीकर स्कूल के प्राचार्य थे। मकबूल फिदा हुसैन और नारायण श्रीधर बेन्द्रे स्कूल में विष्णु से एक साल आगे थे। उन दिनों डिप्लोमा की परीक्षा मुंबई के जे जे स्कूल ऑफ आर्ट्स में हुआ करती थी।

अब विष्णु देवास में रहता था, पढ़ने के लिए इंदौर आता और परीक्षा देने मुंबई जाता। देवास में रहते हुए भी उसका चित्र बनाना जारी रहता। अक्सर ही रातोरात हड़बड़ी में बनाए हुए उसके व्यक्तिचित्रों को प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल जाते।

अखिल भारतीय पुरस्कारों और अपने उम्दा चित्रों के कारण देवास में रहते हुए ही विष्णु चिंचालकर का नाम देश भर के कला पारखियों में प्रसिध्द हो गया था। एक बार कलकत्ता की फाइन आर्टस् सोसाइटी ने अपने वार्षिक प्रदर्शनी में विष्णु को न्यौता भेजा। रवीन्द्रनाथ टैगोर की मित्र लेडी रानू मुखर्जी तब सोसायटी की अध्यक्षा थीं। कम उम्र विष्णु को देखकर वे चकित रह गई और चित्रों से ज्यादा नुमाइश उन्होंने विष्णु की ही की।

चित्रकला में रोजगार की संभावना बड़े शहर में ज्यादा होने से विष्णु ने देवास छोड़ दिया। मुंबई से प्रकाशित 'इलस्ट्रेटेड वीकली' के संपादक माइकल ब्राउन को विष्णु का काम बहुत पसंद था मगर विष्णु के स्वभाव को मुंबई रास नहीं आया और वह 1948 में इंदौर आ गया।

देश को आजादी मिलने के बाद इंदौर से नईदुनिया नाम का अखबार निकलना शुरू हुआ। इसमें कुछ अच्छे उत्साही लोग थे। अखबार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। विष्णु जैसे कम खर्चीले और समझदार चित्रकार ने उसे एक सुरूचिपूर्ण रूप दिया। अखबार में काम करते हुए विष्णु ने लिनोकट और कथा रेखांकन में तरह तरह के प्रयोग किये।

यहीं पर विष्णु को अपना अनन्य मित्र राहुल बारपुते मिला। कुछ ही समय बाद एक तीसरा साथी उन्हें आ मिला– कुमार गंधर्व। चित्रकला, साहित्य, संगीत के तीन मित्रों की एक अनोखी तिकड़ी बन गई। तीनों ने एक दूसरे से सीखा और जीवन को समृध्द बनाया।

इन्हीं दिनों गांधीजी वाला किस्सा हुआ। गांधीजी मैसूर गए हुए थे तब किसी ने उन्हें जोग फॉल्स देखने को कहा। गांधीजी ने जवाब दिया कि वे तो आकाशीय प्रपात यानी बारिश देखते हैं। विष्णु ने इसका अर्थ यह निकाला कि नैसर्गिक चीजें अनुपम हैं। बाकी उनकी नकल हैं फिर वे कितनी भी सुंदर क्यों न बन पड़े। इस फितूर को लेकर विष्णु ने कंपनी के बनाए रंगों और कैनवास बाजू में रख दिए और प्रकृति में उनका मूल रूप खोजने लगे। जल्दी ही उसे समझ में आ गया कि कोई भी ऐसा आकार और रंग नहीं है जो प्रकृति में मौजूद नहीं है।

फ्राइडे ग्रुप हर शुक्रवार मिल बैठ कर गपशप करने वाली उनकी मंडली का नाम था। इस चित्र में है राहुल बारपुते और वसंत सोनाळकर।

अब वह सूखी टहनियों, पत्तों, फलियों, जलाऊ लकड़ी में चित्र खोजने लगा। अपने मन की बात को कलाप्रेमियों तक पहुचाने के लिए उसने 1959 में इन कलाकृतियों की प्रदर्शनी रचाई। लोग चौंक पड़े कि यह कैसी कला? चित्रकार और बुध्दिजीवी लोग उनसे बहस करने लगे। ज्यादातर लोगों का कहना था कि यह फाइन आर्ट का मजाक है। मगर विष्णु अपनी बात से हटा नहीं। वह पुरानी बेकार वस्तुओं से भी चित्र बनाने लगा। शायद ये माता–पिता के संस्कार थे। पिता परचून की पुडिया का कागज और धागा भी संभाल कर रखते थे। माँ सब्जियों और फलों के डंठल, छिलकों और बीजों को भी सुखा पीस कर उनके व्यंजन बनाती थी।

मकई के भुट्टे से निकले पटेल बा

नारियल की नट्टी से बना यह क्या जीव है

सुअर बन दौड़ी आम की गुठली

समकालीन चित्रकारों ने मान लिया कि वह दिमाग से खिसक गया है। कई वर्ष बाद किसी के हाथ प्रख्यात चित्रकार पिकासो की एक पुस्तक लगी। पिकासो भी साइकिल के हैंडल और सीट से सांड बनाने जैसे प्रयोग कर रहा था। तब विष्णु के प्रयोगों को लोगों ने समझा और माना।

विष्णु चिंचालकर का स्टूडियो एक सलीके से रखे हुए कबाडखाने जैसा था जहाँ अनुपयोगी वस्तुएँ कलात्मक बन जाया करती थी। मकड़ी के जाल, पानी में जमी काई से लेकर मकई के डंठल, आम की गुठली, नारियल की नट्टी, लोहालंगर तक चित्रों में सज जाते थे।

किस कबाड़ से बने हैं हिरण और बारहसिंघा

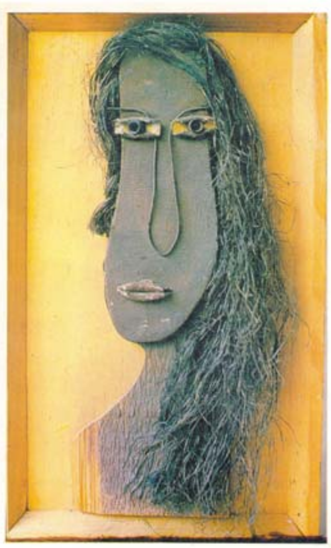

विष्णु ने चप्पल के तल्ले में देखी मोनालिसा

फटे बनियान से बने उनके ईसा मसीह को देखकर तो फिल्मकार होमी और नेली सेठना दीवाने हो गए। क्योंकि यीशु ने ही कहा था कि वह तो चिंदी का एक टुकड़ा मात्र है।

अपने मित्र राहुल बारपुते के साथ घूमते हुए विष्णु ने गाँवों–देहातों के खूब रेखाचित्र बनाए। आदिवासी, देहाती लोग, उनके त्यौहार विष्णु के प्रिय विषय थे। उसकी हाथ की रेखा में सरलता थी। चित्रकार हुसैन मानता है कि रेखा की सरलता उसने विष्णु से पाई।

अपने गायक मित्र कुमार गंधर्व जो बहुत उत्स्फुर्त गाते थे, उनके हावभावों को विष्णु ने अपने तरीके से अपनी सरल रेखाओं में बांध दिया।

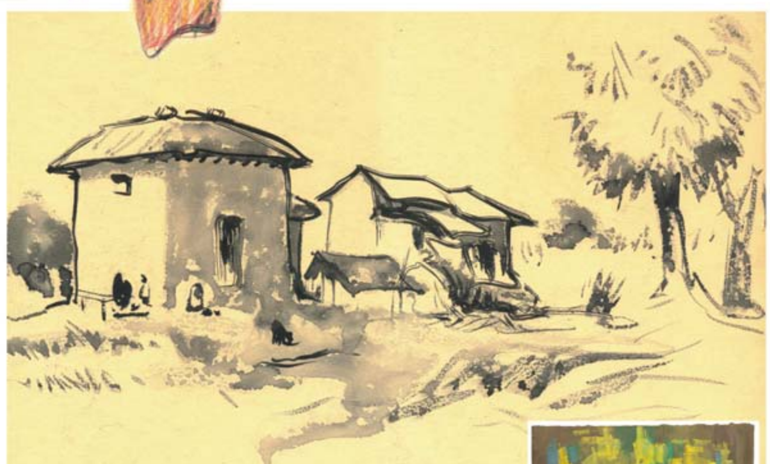

अपने जीवन का बड़ा हिस्सा उसने सामान्य लोगों को प्रकृति को देखना सिखाया। बच्चों को कबाड़ और अक्षरों में कलाकृतियाँ देखना सिखाया। शिक्षकों को बच्चों को समझना सिखाया। कितनी मजे की बात है कि इस शख्स का जन्मदिन भी सन् 1917 की 5 सितंबर को था। जिसे आज शिक्षक दिवस की तरह मनाया जाता है। लोग भी उन्हें गुरूजी पुकारते थे। सन् 2000 की 30 जुलाई को यह चित्रकार दुनिया से चला गया। जैसा शुरू में बताया है, अपने व्यवहार के कारण वह चित्रकार से ज्यादा एक भले इंसान के रूप में याद किया जाता है।

विष्णु चिंचालकर ने कलात्मकता में बहुतेरे प्रयोग किए। पेंटिंग रेखाचित्रों के अलावा उसने लिनोकट, शिल्पकारी, ग्रामीण साज सज्जा, रंगमंच की सजावट का काम और नाटकों में अदाकारी भी की।

उनके गुजर जाने के दस साल बाद एक अंग्रेज मूर्तिकार ने विष्णु चिंचालकर के घर जाकर उनकी मूर्ति बनाई। क्योंकि उसका स्वर्गीय बेटा जब भारत आया था तब उसे सबसे ज्यादा प्रभावित किया था गुरूजी विष्णु चिंचालकर ने।

यू ट्यूब पर गुरूजी की तीन छोटी फिल्में देखी जा सकती हैं।

समाप्त